मेरा गांव घागस

पत्रिका

अंक 1 | सहगल फांउडेशन से जुड़े घागस के लड़के और लड़कियो का अपने गांव के लिये तोहफा। | जनवरी 2004

पत्रिका की शुरुआत किसलिए?

घागस पत्रिका की शुरुआत पारिवारिक जीवन शिक्षा केंद्र की गतिविधि के रुप में युवकों को संचार का अनुभव करवाने, समुदाय की मुख्य भूमिका कबूल करने, स्थानीय संस्कृति को मानने व सूचनाओं को देने के लिए की गई थी। इस स्वस्थ मानसिक मनोरंजन के जरिए युवाजन अपनी संचार आदान-प्रदान की कुशलता का विकास करते हैं।

युवक पत्रिका क्यों बनाना चाहते थे?

युवक पत्रिका इसलिए बनाना चाहते थे क्योंकि इससे समाज में आपसी भाई-चारा बढ़ेगा। लड़कियां इस बात से खुश थी कि उन्हें घागस गांव के छुपे हुए खजाने को कहानियों व कविताओं के माध्यम से प्रकट करने का गृह कार्य दिया गया था।इस अंक में हम उनमें से कुछ को छाप रहें हैं।

युवक किस तरह लाभान्वित हुए?

युवकों ने सीखा कि एक योजना को किस तरह पूरा किया जाता है? एक विचार को कैसे सुव्यवस्थित तरिके से वास्तविकता में बदला जाता है? यह बहुत उपयोगी कुशलता है जो जीवन में कहीं भी इस्तेमाल की जा सकती है।

युवकों ने बताया कि उनके बीच में वास्तविक बातचीत बहुत कम थी और वे एक दुसरे के सपनों को पूरा करने के लिए गहरी मित्रता विकसित करना चहते थे। कुछ युवक स्थानीय सरकारी अधिकारिओं से मिले व जरुरत की सूचनाएं एकत्रित की। वे इस अनुभव से बहुत रोमांचित थे। उन्होने कहा कि वे अब कभी भी बड़े लोगों के सामने पहले की तरह डरेंगे नहीं।

मेरी मां

मुझे मेरी मां के व्यक्तित्व के बारे में यह अच्छा लगता है कि वह सबको समान प्यार करती है और समय पर नमाज पढ़ती हैं। मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि वह समय पर खाना नहीं खाती और अपने स्वास्थ्य के बारे में ध्यान नहीं रखतीं। यदि मेरी मां नही होती तो मैं अपना काम समय पर नहीं कर सकता।

इसलाम

मैं अपनी मां के इस गुण से बहुत ज्यादा प्रभावित हूं कि मेरी मां समय पर नमाज पढ़ती है। वह गरीबों की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहती है। मुझे उनकी यह बात अच्छी नहीं लगती कि वह हमसे अधिक बातें नहीं करती। मेरी मां के बिना मैं अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता, क्योंकि मेरी मां ही मेरे जीवन का आधार है वह मेरी मार्गदर्शक एवं प्रेरणा का स्त्रोत है।

मोहम्मद फारुक

मुझे अपनी मां के व्यक्तित्व के बारे में यह अच्छा लगता है कि वह हम सभी भाई-बहनों को समान रुप से रखती हैं व देखभाल करती हैं पर उनकी यह बात नहीं अच्छी लगती कि वह बहुत जल्दी गुस्सा हो जाती है। यदि मेरी मां न होती तो मेरा कोई साहस न बढाता व हर जानकारी से महरुम रहता।

मुनफेद खान

मेरी मां मुझे किसी भी मुश्किल कार्य में ऐसा साहस व सहयोग प्रदान करती है कि वह कार्य बहुत ही सरल लगने लगता है और इस बाधा को मैं पार कर लेता हूं।

राजिद खान

घागस गांव एक नजर में

लेखक : अरशद हुसेन

हरियाणा के दक्षिण में राजस्थान की सीमा पर घागस गांव ब्लाक नगीना का एक समृद्ध गांव है जो दिल्ली-अलवर मार्ग पर भादस गांव से 6 कि.मी. पश्चिम में अरावली पर्वत की तलहटी में आबाद है । घागस एक ऐतिहासिक गांव है । 302 घरों तथा लगभग 2100 आबादी वाला यह गांव लग भग 1500 वर्ष पुराना है । सन 1947 के बाद इस गांव मे मेव जाती का आगमन हुआ ।

घागस की घटनाओं व उत्पत्ति के बारे में अनिल जोशी द्वारा लिखित (अरजंग तिजारा पेज नम्बर 3 पर विस्तृत रूप से दिखाया गया है । जिसके माध्यम से हमें गांव घागस के बारे में सन 757 हिजरी (667 वर्ष) तक की जानकारी मिलती है । मोजा घागस आदि काल में परगना फिरोजपुर झिरका की जागीर थी. एक दूसरी किताब 'तारिख - ए- फरिश्ता के मुताबिक छज्जू खां ने यह जागीर बादशाह फिरोजशाह बारबक से प्राप्त की । इसका संक्षिप्त वर्णन उपरोक्त किताब में और पोथी जग्गा मे भी अंकित है । भौगोलिक दृष्टि से घागस गांव को हम दो भागों में बांट सकते हैं। पहला पहाड़ी उबड़ - खाबड़ और दूसरा समतल भू भाग । गांव घागस का हदबस्त नम्बर 02 है जिसकी अपनी पंचायत है । गांव की पंचायत के अंतर्गत एक दूसरा गांव शाहपुर भी शामिल है । गांव में पंचायत सदस्यों की कुल संख्या आठ (8) है जिनमें से एक तिहाई महिला सदस्य हैं। यहां पर एक बात खासतौर पर दर्शाने योग्य है कि गांव घागस पेय जल की दृष्टि से मेवात के समृद्ध गांवों में गिना जाता है । इस गांव से आस- पड़ोस के आठ अन्य गांवों को पीने के पानी की पूर्ति होती है लेकिन इसका भू जल स्तर अब दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है जो ग्रामवासियों के लिए चिंता का विषय है ।

<u>गांव के विकास के मील के पत्थरः</u>

- यह गांव लगभग 1500 वर्ष पूर्व बसा था ।
- यह गांव छोकर जाति ने बसाया था । इसके बाद खंजादा जाति का अधिकार रहा।
- सन 1956 में जमीन का बन्दोबस्त हुआ।
- सन 1968 में इस गांव को मुख्य सड़क से जोड़ा गया। सन 1926 में प्राथमिक पाठशाला खुली।
- मेट्रिक पास करने वाले सबसे पहले व्यक्ति श्री छोटे खां थे जिन्होने 1910 मे इस कार्य को अंजाम दिया।
- सन 1970 मे इस गांव में बिजली आई।
- सन 1914 के प्रथम विश्व युद्ध में इस गांव के 4 फौजियों ने भाग लिया था तथा 1930-35 में 9 युवक फौज में भरती हुए थे।
- गांव के सबसे पहले सरपंच श्री हसमल खां थे-- 1952-55 के मध्य।
- 1877 में नलकूप लगाया गया जो पड़ोस के करहेड़ा

गांव में रहने वाले अधिकांश लोग मेव जाति से सम्बन्ध रखते हैं । इसके अलावा गांव में हरिजन, सक्का, नाई, लुहार, वाल्मिकि, फकीर, जोगी, लाला समाज समुदाय के लोग भी आबाद हैं । गांव में आपसी बोल चाल में मेवाती भाषा का प्रयोग किया जाता है। मेवाती भाषा को भारत की उप-भाषाओं में मान्यता प्राप्त है जिसका विवरण राज भाषा भारती पेज नम्बर 56 पर क्रमांक 34 पर अंकित है।

गांव के लोगों का रहन - सहन व खान-पान सादा है. गांव की महिलाएं कृषि कार्य में पूर्ण सहयोग करती हैं। गांव के लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन व मजदूरी है।

गांव के उत्तर-दक्षिण दिशाओं में अरावली पहाड़ में दो चश्में बहते है जिनको गुलर वाला एवं जौहर वाला चश्मा के नाम से जाना जाता है । गांव के पश्चिम में पहाड़ की चोटी पर एक तालाब है जो आज भी रमणीक स्थान है। इसके किनारे पर कदम के 46 वृक्ष आज भी प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करते हैं । घागस गांव में पहाड़ के ऊपर स्थित छल्ला नाम का स्थान धार्मिक मान्यता रखता है।

घागस गांव विकास की दिशा में अग्रसर है। यहां के लोगों ने अपने विकास के लिए 'कालापहाड़ नामक एक संस्था की स्थापना की है । यह संस्था गांव के विकास की सम्पूर्ण जिम्मेदारी अपने हाथ में लेगी । विकास का यह कार्य एस. एम. सहगल फाउंडेशन के सहयोग से किया जा रहा है।

बन्नी का गीत

अरी दादा से कहीयो मेरी दादी मेरी दादी मेरी अबके ही कर दे शादी
अरी अब - अबके ही ठेरो मेरी लाडो सिरसु ने मारे गयो जाड़ो
अरी चाहे जाड़ो मारे चाहे ओलो मेरो बिहा रचा देवो ठाडो ।।
अरी ताऊ से कहीयों मेरी ताई मेरी अबके ही कर दे शादी
अरी अब - अबके ही ठेरो मेरी लाडो सिरसु ने मारे गयो जाड़ो
अरी चाहे जाड़ो मारे चाहे ओलो मेरो बिहा रचा देवो ठाडो ।।
अरी चाचा से कहीयों मेरी चाची मेरी अबके ही कर दे शादी
अरी अब - अबके ही ठेरो मेरी लाडो सिरसु ने मारे गयो जाड़ो
अरी चाहे जाड़ो मारे चाहे ओलो मेरो बिहा रचा देवो ठाडो ।।

(लड़की जवान हो गई है और अपनी दादी, ताई और चाची से अलग-2 मिल कर कहती है कि अपने पतियों से कह कर उसकी शादी करवा दें लेकिन वे सब कहती है कि इस बार सरसों की फसल खराब होने के कारण उसकी शादी नहीं हो सकती)

विशेष आभार

घागस के लोगों व सहगल फाउंडेशन की तरफ से हम उन सब ग्रामीण स्वयं सेवकों को शाबाशी देते हैं जिनकी मदद से चेक डेम, सोखता गड्ढे का कार्य सम्पूर्ण हो पाया। स्वयं सेवकों को कोई व्यक्तिगत फायदा नहीं हुआ लेकिन वे एक कुशल घागस का निर्माण करना चाहते थे। सईद अहमद ने दिखाया कि वह घागस गांव का खैरख्वाह है। उसने सभी कार्यों मे तन-मन से बहुत समय दिया तथा बहुत से कार्यों में नेतृत्व किया। उम्मीद है कि आगामी वर्षों में इस गांव में बहत से सईद सामने आएंगे।

बन्ना का गीत

हाथ में घड़ी जेब पेन बना तो मेरो बन गया जंटल मैन
बना की दादी पूछे टेम, बना तो मेरो हंस के बतावे टेम ।।
हाथ में घड़ी जेब पेन बना तो मेरो बन गया जंटल मैन
बना की ताई पूछे टेम, बना तो मेरो हंस के बतावे टेम ।।
हाथ में घड़ी जेब पेन बना तो मेरो बन गया जंटल मैन
बना की चाची पूछे टेम, बना तो मेरो हंस के बतावे टेम ।।
हाथ में घड़ी जेब पेन बना तो मेरो बन गया जंटल मैन
बना की माई पूछे टेम, बना तो मेरो हंस के बतावे टेम ।।
शादी का गीत (बन्ना - बन्नी)

(जब दुल्हा हाथ में घड़ी बांधकर तथा जेब में पैन डालकर, सज-धज कर निकलता है तब उसकी दादी, ताई, मां व भाभी उससे समय पूछती है तब वह हंसकर उन्हें घड़ी देखकर समय बताता है ।)

निर्देशक के केबिन से

एस.एम. सहगल फाउंडेशन ने 'आदर्श गांव' विकसित करने की दिशा में मेवात के कुछ गांवो का चयन किया। हमने आदर्श गांव चुनने के लिए कुछ माप-दंड निर्धारित किए। जब हमारी टीम ने अप्रैल 2002 में घागस गांव का दौरा किया तो ऐसे लोग मिले जिनकी हमें तलाश थी। इसलिए घागस गांव का चयन किया गया।

हमारे कार्यक्रम जल-प्रबंधन, आय वृद्धि, पारिवारिक जीवन शिक्षा व ग्रामीण स्वास्थ्य गांव मे अप्रैल 2002 से लागू किए गये। हमें घागस गांव के लोगो से पूर्ण सहयोग मिला है। हमने समुदाय के सहयोग से निम्न कार्य सफलातापूर्वक पूर्ण किए हैं।

चेक डेम, कुओं का निर्माण व सफाई, पारिवारिक जीवन शिक्षा व नया कार्यक्रम 'पत्रिका'। पत्रिका के लिए सामग्री जुटाने के लिए गांव के नवयुवकों ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

''ग्राम आधारित विकास संस्था' बहुत कम समय मे स्थापित की गई है । यह एस.एम. सहगल फाउंडेशन व घागस गांव दोनों के लिए मुख्य उपलब्धि है। ग्राम विकास संस्था गांव के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी इसलिए संस्था के सदस्यों को सभी कार्यक्रमो मे सक्रिय रूप से भाग लेने की जरूरत है। सरकार व अन्य एजेंसियों से तालमेल करने के लिए ग्राम विकास संस्था की योग्यता बढ़ाने के लिए फाउंडेशन भरसक प्रयत्न कर रहा है।

हमें एस.डी.एम., ब्लाक विकास व पंचायत अधिकारी तथा अन्य सरकारी एजेंसियों से अच्छा सहयोग मिला है। हमने अभी कार्य की शुरुवात की है। हमे यह देखना है कि गांव में पीने का साफ पानी उचित मात्रा मे उपलब्ध हो। किसान ऐसी प्रौद्योगिकी इस्तेमाल कर सकता है जिसमे उत्पाद की गुणवत्ता से समझौता किए बिना कम लागत से पैदावार मे बढोतरी हो। हमे नवयुवकों की कुशलता में विकास करना है। किशोर बालिकाओं की कुशलता मे विकास करने व अनौपचारिक शिक्षा देने के प्रयास को हमे निरंतरता देनी है। हमें पहले से विद्यमान या भविष्य में आनी वाली बीमारियों के उन्मूलन के लिए स्वास्थ्य के क्षेत्र मे सक्रिय भूमिका निभानी है।

मैं सहगल फाउंडेशन टीम के अन्य सदस्यों के साथ ग्रामीण भाइयों को उनकी सफलता पर बधाई देता हूं तथा पत्रिका परियोजना की सफलता की कामना करता हूं।

-- जय सहगल

पराई सीख

दो आदमी थे । एक गरीब और एक धनवान । एक चुगलखोर आदमी एक दिन उस धनवान व्यक्ति से कहता है कि तु अपना पैसा किसी को भी मत दिया कर । किसी की भी मदद मत किया कर । धनवान आदमी ने उसकी बात मान ली । कुछ समय पश्चात वह धनवान आदमी कंगाल हो गया और ऐसा समय आ गया कि उसने अपने बेटे को गिरवी रखना पड़ा । 200 रु में बेटे को गिरवी रखकर वह ज़रुरत का सामान ले आया । जिसके पास उसने अपने बेटे को गिरवी रखा था उस साहूकार ने उस लड़के को जहाज में सामान लादकर इधर-उधर जाने वाला काम दिलवा दिया । साहूकार के सात लड़के थे । उनमें से छः बेटों की तो शादी हो गई परंतु एक लड़का थोड़ा सांवले रंग का था । जो भी रिश्ता आता लड़के को देखकर वापिस चला जाता । एक दिन साहूकार ने सोचा क्यों न मैं इस लड़के को दिखाकर अपने लड़के के बदले उस का रिश्ता ले लूं और बाद में शादी अपने ही लड़के से कर लूं। एक दिन रिश्ता तय हो गया । लेकिन शादी के समय बनिये के लड़के को देखकर उसके भाईयों ने कहा कि यह लड़का तो कोई और है । बिरादरी के दबाव डालने पर उस लड़के को लाए और उसके साथ उसकी शादी हो गई । जब वह लड़का उससे शादी करके गाड़ी में जा रहा था तब उसने अपनी पत्नी से अपनी पूरी दास्तान सुनाई और फिर अपने काम पर चला गया ।

लड़की ने उसका बहुत इन्तज़ार किआ। वह नही आया तो बाद में उसने अपने को एक सन्यासी के भेष में बदल लिया । रात-दिन पूजा पाठ करती तो आस पास में उसे सब मानने लगे और हर कोई अपनी परेशानी लेकर आता तो वह सबको राख की चुटकी दे देती । एक दिन उस लड़के के गांव से भी कोई आदमी आया और उसे अपने गांव ले जाने को कहा । वह उसके साथ चली गई । फिर वह उस गांव में भी लोगों की समस्या सुनती और राख की चुटकी दे देती । एक दिन उसी लड़के का पिता भी उससे अपनी दास्तान सुनाता है। उसको भी उसने राख की चुटकी दी और कहा कि इसको जाकर घर के चारों कोनों में डाल देना । फिर उसकी घर की हालत सुधरने लगी। वह दोबारा उसी साध्वी के पास जाता है और कहता है कि अब मेरे घर में आमदनी बढ़ रही है । फिर उस लड़की ने अपने हाथ की चूड़ी निकाल कर दे दी और कहा कि उस साहूकार को दे देना । वह जितने पैसे काटे उसे दे देना कुछ भी मत बोलना और जब आप का बेटा वापिस आए तब मुझे एक घंटा पहले बता देना। उसने साध्वी को बता दिया कि अब मेरा लड़का घर आने वाला है । तब वह उस लड़के के घर जाकर एक कमरे में दुल्हन की तरह सज-धज कर बैठ गई । तब उस लड़के ने अपने पिता से कहा कि आप ने कैसे मुझे छुड़ाया । तब उसके पिता जी उसको सारी बात बताते हैं और उस साधवी से मिलवाते हैं जो साधू बनी हुई थी । लड़का उसे पहचान लेता है । फिर वह लड़की उसे सारी बात बताती है । वे अपने घर में हंसी-खुशी रहते लगते हैं ।

समीक्षाः जो दूसरों की मदद करता है भगवान उसकी मदद करता है ।